

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 2902
10 मार्च, 2026 को उत्तरार्थ

विषय: कृषि में रोगाणुरोधी का उपयोग

2902. डॉ. अमर सिंह:

क्या कृषि और किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने उन बढ़ते राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय साक्ष्यों की जांच की है जो इंगित करते हैं कि कृषि, पशुधन और मत्स्य पालन में व्यापक और खराब विनियमित रोगाणुरोधी उपयोग रोगाणुरोधी प्रतिरोध का एक प्रमुख चालक है, जिससे प्रतिरोधी रोगजनक जानवरों, मनुष्यों और पर्यावरण के बीच फैलने में सक्षम होते हैं;

(ख) यदि हाँ, तो खाद्य उत्पादन प्रणालियों में रोगाणुरोधी खपत, विनियामक निरीक्षण की विफलताओं, नियमित उपयोग को प्रोत्साहित करने वाली कृषि पद्धतियों और मिट्टी, पानी एवं खाद्य श्रृंखलाओं में प्रतिरोध, जीन प्रसार में योगदान देने वाले मार्गों पर सरकार द्वारा विश्लेषण किए गए डेटा का ब्यौरा क्या है; और

(ग) कृषि में रोगाणुरोधी प्रबंधन को लागू करने, गैर-चिकित्सीय उपयोग को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने, पशुधन और खाद्य उत्पादों में प्रतिरोधी जीवों की निगरानी को मजबूत करने तथा बढ़ते एएमआर खतरे से निपटने के लिए मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण प्राधिकारियों के साथ समन्वित कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा प्रस्तावित व्यापक "वन हेल्थ" रणनीति का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री (श्री भागीरथ चौधरी)

(क) एवं (ख): देश के किसी भी भाग से खाद्य फसलों और मत्स्यपालन में एंटीबायोटिक दवाओं के अंधाधुंध उपयोग के कारण रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) के विकास और प्रसार से संबंधित कोई रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई है। तथापि, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, पशुपालन एवं डेयरी विभाग और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के सहयोग से पशुधन और मत्स्य पालन क्षेत्रों में रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) से निपटने के लिए अनुसंधान, निगरानी और क्षमता निर्माण कार्य कर रहा है। इसके अतिरिक्त, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के संस्थान खाद्योत्पादक पशुओं, मुर्गी पालन और मत्स्यपालन में रोगाणुरोधी उपयोग और प्रतिरोध पैटर्न की निगरानी करते हैं, साथ ही टीके, जैव सुरक्षा, प्रोबायोटिक्स और बेहतर पशुपालन पद्धतियों जैसे विकल्पों को बढ़ावा देते हैं।

आईसीएआर ने वर्ष 2019 में देश में पशुधन और मत्स्य पालन के पहलुओं को शामिल करते हुए एएमआर निगरानी के लिए एक नेटवर्क कार्यक्रम शुरू किया, जिसका नाम भारतीय मत्स्य एवं पशु रोगाणुरोधी प्रतिरोध नेटवर्क (आईएनएफएएआर) है। यह कार्यक्रम खाद्य और एफएओ के तकनीकी सहयोग से चलाया जा रहा है और इसमें भारत भर के 20 पशु विज्ञान केंद्र और 11 मत्स्य पालन केंद्र शामिल हैं। आईसीएआर- राष्ट्रीय जैविक तनाव प्रबंधन संस्थान एएमआर शमन में विशेष रूप से निम्नलिखित के माध्यम से योगदान देता है:

- i. पादप रोगजनक जीवाणुओं में रोगाणुरोधी प्रतिरोध की निगरानी।
- ii. प्रतिरोध निर्धारकों का जीनोम-आधारित सत्यापन।
- iii. एंटीबायोटिक दवाओं पर निर्भरता कम करने के लिए जैविक नियंत्रण एजेंटों सहित वैकल्पिक उपायों को बढ़ावा देना।

इसके अतिरिक्त, आईसीएआर-राष्ट्रीय एकीकृत कीट प्रबंधन अनुसंधान संस्थान (एनआरआईआईपीएम) पारिस्थितिक रूप से आधारित एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) को बढ़ावा देता है, जिसमें जैविक नियंत्रण, फसल चक्रण, प्रतिरोधी किस्में, पर्यावास प्रबंधन और यांत्रिक विधियों पर जोर दिया जाता है। इसके अतिरिक्त, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय अपने केंद्रीय एकीकृत कीट प्रबंधन केंद्रों (सीआईपीएमसी), कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) और राज्य कृषि विभागों के माध्यम से किसानों, राज्य कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं और कीटनाशक डीलरों को कीटनाशकों के सुरक्षित संचालन, अवैध कीटनाशकों के उपयोग पर नियंत्रण, आवश्यकता-आधारित और विवेकपूर्ण उपयोग तथा रासायनिक कीटनाशकों के अंतिम उपाय के रूप में उपयोग के बारे में शिक्षित और प्रशिक्षित करने हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है, जिनमें किसान क्षेत्र विद्यालय (एफएफएस), दो दिवसीय और पांच दिवसीय मानव संसाधन विकास कार्यक्रम तथा 30 दिवसीय मौसमी प्रशिक्षण कार्यक्रम (एसएलटीपी) शामिल हैं।

(ग): स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने 2025 में रोगाणुरोधी प्रतिरोध पर व्यापक राष्ट्रीय कार्य योजना संस्करण 2.0 (एनएपी-एएमआर 2.0) शुरू की है, जो 2025-2029 की अवधि को कवर करने वाली रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) से निपटने के लिए भारत की अद्यतन राष्ट्रीय कार्यनीतिक सुपरिभाषित फ्रेमवर्क और अंतरक्षेत्रीय सहयोग जिनमें कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय और पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय शामिल हैं के माध्यम से तैयार किया गया है। यह योजना "वन हेल्थ" दृष्टिकोण का अनुसरण करती है, जिसका लक्ष्य मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य, कृषि और पर्यावरण क्षेत्रों में रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) को कम करना है। एनएपी-एएमआर के तहत छह कार्यनीतिक प्राथमिकताएं निर्धारित की गई हैं: (i) प्रभावी संचार, शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से एएमआर के बारे में जागरूकता और समझ में सुधार करना; (ii) निगरानी के माध्यम से ज्ञान और साक्ष्य को मजबूत करना; (iii) प्रभावी संक्रमण रोकथाम और नियंत्रण के माध्यम से संक्रमण की घटनाओं को कम करना; (iv) स्वास्थ्य, पशुओं और भोजन में रोगाणुरोधी एजेंटों के उपयोग को अनुकूलित करना; (v) एएमआर गतिविधियों, अनुसंधान और नवाचारों के लिए निवेश को बढ़ावा देना; और (vi) एएमआर पर भारत के नेतृत्व को मजबूत करना।